लेसन प्लान : कितने सार्थक?

कालू राम शर्मा

लेसन प्लान (पाठ योजना) स्कूली शिक्षा के पूर्व सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में एक आवश्यक तत्व के रूप में शामिल किया गया है। अनुभव बताते हैं कि लेसन प्लान को लेकर यों कोई समस्या नहीं आती, क्योंकि लेसन प्लान का एक तयशुदा ढांचा शिक्षा जगत में मौजूद है और उस ढांचे में जिस विषय के पाठ का कक्षा में अध्यापन करना होता है उसके व शिक्षण शास्त्र के तत्वों को फिट किया जाता है।

लेसन प्लान की जरूरत क्यों? इसको लेकर पूर्व सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम में परंपरागत नजरिया अपनाया जाता है जिसमें प्रभावी शिक्षण के लिए एक सुसंगत ढांचा तैयार करना इसका एक उद्देश्य होता है। इससे शिक्षक व्यवस्थित होता है, सिलेबस के संबंध में दिशा प्रदान करता है, पाठ पढ़ाते समय शिक्षक को अधिक विश्वास देता है। भविष्य की योजना तैयार करने में उपयोगी आधार प्रदान करता है। विभिन्न बच्चों के लिए शिक्षक को योजना बनाने में मदद करता है। एक प्रमाण है कि शिक्षक ने पढ़ाने के लिए उचित और पर्याप्त प्रयास किए हैं।

अगर इस सवाल को शिक्षा के प्रगतिशील नजरिए से टटोलें तो समझ में आता है कि शिक्षक बनने से पहले शिक्षार्थी को स्कूल, शिक्षा के लक्ष्य, मनोविज्ञान, शिक्षा का इतिहास, समुदाय आदि मसलों पर समझ बनानी होती है। और दरअसल, यही सब कुछ पाठ्यक्रम में शामिल होता है। पाठ्यक्रम का एक हिस्सा कक्षा शिक्षण को लेकर पाठ योजना को समर्पित होता है। सैद्धांतिक तौर पर देखें तो पाठ योजना के जरिए शिक्षार्थी पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक पहलुओं का अध्ययन करते हैं उन्हें स्कूल में बच्चों के साथ कक्षा शिक्षण के दौरान आजमाना है। असल में सैद्धांतिक व व्यवहार के पहुलओं के बीच तालमेल बिठाना है। आखिर जिस मनोविज्ञान का शिक्षार्थियों ने अध्ययन किया उसकी प्रमुख बातों को कक्षा शिक्षण के दौरान समझना या कि जांचना है। इस लिहाज से लेसन प्लान पूर्व सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण का एक अहम तत्व हो सकता है। लेकिन इसमें जड़ता है। यह मात्र एक औपचारिकता बनकर रह गया है।

मैंने पूर्व सेवाकालीन शिक्षार्थियों के लेसन प्लान देखे हैं जिन्हें वे एक तयशुदा ढांचे में तैयार करके, कक्षा में क्रियांवित करते हैं। लेसन प्लान कैसे बनाया जाता है इस पर काफी कुछ कहा गया है। इसके तय चरण बताए जाते हैं मसलन - उद्देश्य, रूपरेखा, सामान्य सूचना, सामान्य उद्देश्य, विशिष्ट उद्देश्य, पूर्व ज्ञान, प्रस्तावना, प्रस्तुतीकरण, बोध प्रश्न, श्याम पट्ट पर कार्य, मूल्यांकन, गृह कार्य।

लेसन प्लान मूलतः किसी कक्षा की पाठ्यपुस्तक के पाठ की कक्षा शिक्षण की ही योजना है। जिसे मात्र पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु के शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है। इसमें उस पाठ को छोटी-छोटी इकाइयों में तोड़ा जाता है और फिर समय के सापेक्ष कक्षा में करने के लिए पीरियडवार बांटा जाता है।

जाहिर है कि जो लेसन प्लान शिक्षार्थियों द्वारा तैयार किए जाते हैं वे एकाकीपन लिए व संकुचित होते हैं। जहां शिक्षार्थियों को समाज, स्कूल व बच्चों की पृष्ठभूमि के बारे में बहुत अधिक जानकारी नहीं होती। बस तयशुदा बिंदुओं को आधार बनाकर शिक्षार्थी कक्षा में शिक्षण कार्य संपन्न करने की कोशिश करता है। अगर कक्षा शिक्षण उन बिन्दुओं के अनुरूप संपन्न हो जाए तो लेसन प्लान तो सफल मान लिया जाता है मगर बच्चों ने असल में क्या सीखा व शिक्षार्थी ने क्या सबक सीखे, इसका आकलन करने की कोशिश नहीं होती।

लेसन प्लान बनाने में इस मसले को शामिल नहीं किया जाता कि शिक्षार्थी यह पता कर सके कि जिस इलाके में स्कूल है वहां के बच्चों की भाषा क्या है। एक शिक्षक शिक्षार्थी को उस क्षेत्र की सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक समझ होना आवश्यक है जिस क्षेत्र के स्कूल में वह शिक्षण करने जा रहा है। ये वे पहलू हैं जो शिक्षण के दौरान विमर्श का हिस्सा बनने चाहिए। तभी तो शिक्षा को एक ऐसे उपक्रम के रूप में देखा संभव होगा जिसके जरिए समाज की मान्यताओं व परंपराओं को विमर्श का हिस्सा बनाया जा सकता है।

बच्चों को सीखने के अधिक से अधिक अवसर दिए जाएं। बच्चे स्वयं ज्ञान का निर्माण करें, उन्हें अधिक से अधिक सवाल पूछने व खोजने, सोचने, समस्याओं के हल करने के अवसर मिलें, और अंततः हम विषयों के शिक्षण के जरिए संवैधानिक मूल्यों को शामिल करते हुए उनमें उनको पोषित करें। दरअसल ये अपेक्षित बातें हाशिये पर चली जाती हैं और शिक्षण कार्य एक कर्मकांड बनकर रह जाता है।

इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी की काफी ऊर्जा खर्च होती है। यह भी देखने में आता है कि यह प्रक्रिया उबाऊ और थकाने वाली होती है। शिक्षार्थियों के लिए लेसन प्लान उनके पाठ्यक्रम का आधारभूत व अविभाज्य हिस्सा होता है लेकिन इसके ढांचे व कार्यप्रणाली पर सवाल उठाने या सकारात्मक फेरबदल की गुंजाइश कम ही होती है।

लेसन प्लान में अधिक जोर इस पर होता है कि जो कुछ भी फॉर्मेट में चरणबद्ध ढंग से लिखा गया है उसे उसी क्रम में पूरा किया जाना है और वह अपेक्षित व तयशुदा है। वही प्रश्न पूछे जाने हैं, वही प्रयोग, गतिविधि, टीएलएम (टीचिंग लर्निंग मटेरियल) पाठ्य/टैक्स्ट कक्षा में शामिल किए जाएंगे जिन्हें शिक्षार्थी ने अपने प्लान में शामिल किया है। कक्षा की तात्कालिक जरूरतों के आधार पर उनमें बदलाव करने की संभावनाएं नगण्य कही जा सकती है।

बुनियादी दिक्कत इस बात की है कि बच्चों को निष्क्रिय, महज सूचना प्राप्त करने वाले के रूप में देखा जाता है। बच्चों को सोचने-विचारने, तर्क करने वाले के रूप में नहीं देखा जाता बल्कि उन्हें इस मामले में खाली घड़े (टेबुला रासा) के रूप में देखा जाता है।

जब मैं लेसन प्लान पर सामग्री पढ़ रहा था तो मुझे एक उपमा मिली। शिक्षण की उपमा भवन निर्माण से की गई है। जैसे कि ''शिक्षक के लिए पाठ योजना निर्माण उतना ही आवश्यक है जितना एक अभियंता को भवन निर्माण के लिए मानचित्र या ब्लू प्रिंट आवश्यक होता है।'' दरअसल, इस उपमा में बुनियादी दिक्कत है। भवन का निर्माण एक अलग मामला है और बच्चों को शिक्षित करना निहायत ही फर्क। भवन बनाने की प्रक्रिया में एक पक्ष जो कि भवन बनाने वाला इंजिनियर, कारीगर एक सक्रिय पक्ष है वहीं भवन और उसमें इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ें एक निष्क्रिय पक्ष। जहां नींव बनाना, ईंटों की जुड़ाई, पलस्तर, दरवाजे, रोशनदान, खिड़कियां, टाइल्स वगैरह की फिटिंग की जानी होती है। यहां किसी जीवंत संवाद की जरूरत नहीं पड़ती। हां, इन चीज़ों की तासीर के बारे में बस एक कारीगर को पता होना चाहिए। उसे नाप-जोख का पता होना चाहिए। वहीं बच्चों का सीखना एक जीवंत प्रक्रिया है जहां अनुभवों, संदर्भ व समझ, विषय की तासीर की समझ, सीखने-सिखाने की आधारभूत समझ अपरिहार्य है।

लेसन प्लान की एक मिसाल यहां देखी जा सकती है- कक्षा में बच्चे कतार में बैठे हुए हैं। शिक्षक शिक्षार्थी तैयारी के साथ आई है। वह टीएलएम के रूप में पोस्टर्स बनाकर लाई है। उसने अभी बैग को खोला नहीं है। ऐसा इसलिए कि वह संस्पेंस बरकरार रखना चाहती है। वह विषय के मुद्दे को कुछ सवालों के जरिए जन्म देना चाहती है। उसने सलीके से बोर्ड को साफ किया।

यद्यपि लेसन प्लान में बच्चों से शिक्षार्थी द्वारा सवाल पूछने की गुंजाइश तो रखी जाती है मगर वे सवाल कृत्रिम होते हैं। ये सवाल कक्षा में लेसन को आगे बढ़ाने के लिए व तयशुदा बिंदुओं को महज क्रियांवित करने के लिए होते हैं न कि बच्चों के सीखने में मदद करने के लिए।

शिक्षक शिक्षार्थी ने सवाल पूछने शुरू किए। ''आपने घर से स्कूल आने के पहले क्या-क्या किया?'' बच्चों के अलग-अलग जवाब थे। किसी ने कहा कि वह बकरी को चराने ले गया। किसी ने कहा चाय पी, पानी पिया। किसी ने कहा कि खेत पर गया था सुबह से। एक ने कहा कि अपनी छोटी बहन के साथ खेला। लड़कियों में से एक बोली कि झाड़ू लगाई। शिक्षार्थी अभी उनके जवाबों से संतुष्ट नहीं थी। वह पूछने लगी। और क्या किया? बच्चों को एहसास हुआ कि ये सब जवाब गलत हैं। बच्चों को एहसास हुआ कि शिक्षिका चाहती है वह जवाब वे नहीं दे पा रहे हैं। शिक्षार्थी ठिठकी हुई थी। आखिर उनकी मर्जी का जवाब नहीं मिला था। एक ने कहा- रोटी (आमतौर पर भोजन करने को रोटी खाना कहा जाता है) खाई। शिक्षार्थी ने फिर पूछा। रोटी किससे बनती है? बच्चों का जवाब था - ''आटे से''। आटा किससे बनता है? बच्चों ने कहा- ''धान से'' (इस इलाके में अनाज को धान कहा जाता है)।

शिक्षार्थी थोड़ी संतुष्ट लग रही थी कि बातचीत कुछ रास्ते पर आ रही है। उसने अभी भी पूछना जारी रखा। धान कहां से आता है? बच्चों ने कहा- ''खेत से''? धान उगाने के लिए क्या किया जाता है? बच्चों ने कहा- ''धान बोया जाता है''। आखिर शिक्षार्थी को ही बताना पड़ा कि धान बीज है और आज हम बीज का अध्ययन करेंगे।

इस पूरे मामले में शिक्षार्थी द्वारा पूछे गए सभी सवालों के जवाब उन्हें रास नहीं आ रहे थे क्योंकि वे जिस पाठ्यवस्तु को पढ़ाना चाहती हैं उसका शीर्षक ''बीज'' बताने की अपेक्षा वह अपने लेसन प्लान के सवालों में कर चुकी थीं। इस प्रकार अपेक्षित जवाब पाने के चक्कर में ''सवाल पूछना'' एक कर्मकांड ही बनकर रह जाता है।

इसके तुरंत बाद ही टीएलएम के रूप में बीजों से संबंधित चार्ट्स का इस्तेमाल किया गया। जहां बीजों के आकार-प्रकार पर शिक्षार्थी द्वारा ही ज्ञान परोसा गया। इनसे संबंधित प्रश्न शिक्षार्थी द्वारा पूछे गए। बीजों के प्रकीर्णन पर चर्चा की गई। और आखरी में मूल्यांकन के अंतर्गत कुछ प्रश्न पूछे गए और लेसन प्लान की रस्म अदायगी पूरी हो गई।

जाहिर है कि प्रश्न भी खुद ने ही बनाए और प्रश्नों के जवाब भी आपने ही सोचे हैं कि बच्चे क्या जवाब देंगे। अगर अपेक्षित जवाब नहीं मिला तो फिर उसी जवाब को पाने के लिए अगला सवाल! और फिर उस जवाब के बाद अगला सवाल क्या हो सकता है, यह भी तय होता है। बच्चों को सोचने विचारने के अवसर नदारद होते हैं। शिक्षार्थी का पूरा फोकस इस पर होता है कि हर हाल में लेसन प्लान पूरा हो जाए।

यों लेसन प्लान की कमजोरियों को ध्यान में रखते हुए स्कूली शिक्षा में कार्य करने वाले लोग 'टीचिंग प्लान' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि नाम में क्या रखा है मगर यह सच है कि लेसन प्लान एक रस्म अदायगी जैसी चीज़ बनकर रह गई है। शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवक-युवतियां स्कूली शिक्षा को लेकर एक गहरी समझ बनाएं, शिक्षा व समाज के सैद्धांतिक पहलुओं को आत्मसात करें इसके लिए जरूरी है कि वे अपने कैरियर का शुरुआती निर्धारित वक्त स्कूलों में लगाएं। इस दौरान स्कूली शिक्षा से संबंधित जरूरी दस्तावेज जिनमें शामिल है- शिक्षा की नीतियां, शिक्षण विधियां, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा का दर्शन, शिक्षा का इतिहास आदि का स्वाध्याय करें। साथ ही वे संस्थान द्वारा स्कूली शिक्षा के संदर्भ में किए जाने वाले प्रत्येक कार्य में सक्रिय भागीदारी भी करें। स्कूलों में जाकर वे मात्र अवलोकनकर्ता ही न बनें बल्कि यह समझें कि आखिर एक स्कूल कैसे संचालित होता है। वहां समाज-स्कूल, शिक्षक-शिक्षक, शिक्षक-बच्चों के बीच किस प्रकार के रिश्ते हैं। बच्चों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है? उनकी दिनचर्या क्या है? सरकारी स्कूलों के बच्चे कमजोर, वंचित, हाशियाकृत समुदाय के होते हैं। उनको लेकर समाज में प्रचलित मान्यताओं को टटोला जाए। साथ ही इसमें उन बच्चों का शिक्षण करना भी शामिल हो। बच्चों के शिक्षण के लिए टिचिंग प्लान का प्रावधान हो जहां वे वाकई में कक्षा शिक्षण की जटिलता को समझें और जो तात्कालिक मसले कक्षाओं में जन्म लेते हैं उनके निराकरण के बारे में विमर्श करें।

उल्लेखनीय है कि इन संस्थानों में जो युवक-युवितयां अपना कैरियर देखते हैं वे अपने विषय में उच्च शिक्षा जिसमें स्नातकोत्तर, पीएचडी वगैरह की डिग्री शामिल है, लेकर आते हैं। अब सवाल यह है कि आखिर जो ज्ञान उन्होंने अपने अध्ययन के दौरान अर्जित किया उसे बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर पर जाकर कैसे कक्षा शिक्षण में शामिल किया जाए ताकि उसे वे आत्मसात कर सकें। उन विषयों से संबंधित प्रचलित मान्यताओं व विश्वासों को कैसे बच्चों के बीच शिक्षण के दौरान विमर्श का हिस्सा बनाया जाए। उस विषय के शिक्षण के लिए कौनसी विधि अधिक कारगर हो सकती है। इस पूरी प्रक्रिया में अपने द्वारा बनाए गए प्लान को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने से अधिक यह समझना होता है कि अगर उस अवधारणा पर समझ न बन सकी तो उसकी वजहें क्या हैं? कौनसी गतिविधि या टीएलएम क्यों कारगर हुई या नहीं हो सकी। बेशक इन वजहों को बच्चों में नहीं बल्कि अपने शिक्षण के तरीकों में तलाशने की जरूरत होती है?

लेसन प्लान को पाठ्यपुस्तक की ही तरह एक आदर्श या कि पवित्र चीज के रूप में देखने की परंपरा रही है। स्कूलों में शिक्षक व बच्चों को यही एहसास कराया जाता है कि पाठ्यपुस्तक से दाएं-बाएं होना, उसके परे जाना मानो कोई नियम का उल्लंघन हो। वैसे ही लेसन प्लान से परे जाना या उसमें तब्दीली करना अमान्य-सा होता है।

हालांकि लेसन प्लान व टीचिंग प्लान दोनों को कई बार परस्पर समानार्थी रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। लेसन प्लान या टीचिंग प्लान को पवित्र या आदर्श मानने की भूल करने का अर्थ होगा कि हम उस यथास्थितिवाद को पोषित कर रहे हैं। और इतना ढीला भी नहीं छोड़ सकते कि ''सब कुछ चलता है''। हमें कुछ चीज़ों को अच्छे से पकड़कर रखना ही होगा जैसे कि विषय की तासीर की बेहतर समझ।

अगर आप बच्चों से कोई सवाल पूछते हैं और अगर वे गलत जवाब दे देते हैं तो उसे स्वीकार करने की जगह प्लान में होनी ही चाहिए। बल्कि इससे भी एक कदम और आगे यह पता लगाने का होना चाहिए कि आखिर बच्चे ने गलत जवाब क्यों दिया? गलतियां सीखने की सीढ़ियां होती है, उन गलतियों का विश्लेषण शिक्षार्थी द्वारा किया जाना चाहिए कि गलतियों का पैटर्न क्या है ताकि उनके आधार पर अगला प्लान तैयार किया जा सके।

असल में एक टीचिंग प्लान में वह सब शुमार होना चाहिए जिसे शिक्षा के लक्ष्यों के रूप में अर्जित करना चाहते हैं। जहां हम बच्चों को सीखने वाले और एक सक्षम व्यक्ति के रूप में देख रहे हों। साथ ही बने बनाए सवालों की झड़ी नहीं लगाएं। जहां बच्चों को ज्ञान के वाहक के रूप में नहीं बल्कि ज्ञान के निर्माता के रूप में हम देख रहे हों। ◆

लेखक परिचय : पिछले पच्चीस सालों से विज्ञान शिक्षण, पर्यावरण अध्ययन, शिक्षा और समाज के विषयों पर निरंतर लेखन। एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 वर्ष तक संलग्न रहे। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, खरगोन (मध्यप्रदेश) में कार्यरत हैं।

संपर्क : 8226000428; **ईमेल :** kr.sharma@azimpremjifoundation.org